भारतीय उद्योग के पितामह – जमशेदजी टाटा

Father of Indian Industry – Jamshedji Tata

प्रो. वीरेन्द्र ग्रोवर,
प्रबन्ध सम्पादक ''उद्योग संचेतना''
vngrover@gmail.com

संक्षिप्त परिचय :

पारसी पुजारी परिवार में 3 मार्च, 1839 को जन्मे जमशेदजी नुसरवानजी टाटा आज उद्यमिता के अवतार हैं। उन्होंने 1868 में टेक्सटाइल मिल से जिस उद्योग समूह की नींव रखी थी, उसके आज 10 वर्गों (वर्टिकल्स) में तीस उद्योग हैं। उद्योग निर्माण में श्रमिक कल्याण की जो पहल एम्प्रेस मिल से हुई उसकी परिणति जमशेदपुर के स्टील संयत्र की टाउनशिप से होती है। स्वदेशी वस्त्र के बाद स्टील संयंत्र, जलविद्युत संयंत्र और राष्ट्रीय प्रतिभा पोषण के लिए उच्च शिक्षण संस्थान की परिकल्पना को लेकर जमशेदजी ने 1880 से 1904 तक संघर्ष किया, जो उनके प्रयाण के बाद ही मूर्त रूप ले सके, लेकिन जिस मेक–इन–इंडिया की भावना का बीजारोपण जमशेदजी ने किया, वह विशाल वट वृक्ष आज के युवाओं तथा उद्यमियों के लिए प्रेरणा है।

Brief Introduction :

Born in a family of Parsi priests on March 3, 1839, Jamshedji Nusserwanji Tata is an incarnation of entrepreneurship. The story that started with a Textile Mill in 1868, has turned into a global enterprise with 30 sub-enterprises in 10 verticals. Though, the 3 big dreams he saw, couldn't materialise till his death in 1904, but the spirit he lived is alive even today inspiring both youth and the entrepreneurs alike.

समग्रतामय उद्यम :

जमशेदजी टाटा उद्यमिता की अनूठी मिसाल थे। राष्ट्र के लिए पूँजी निर्माण, लोककल्याण, जनसशक्तीकरण, तथा स्वावलंबन, उनके उद्यम के मूल सिद्धांन्त थे। टाटा समूह में कुछ बातें शुरू से अनन्य रूप से जुड़ी रही हैं, जैसे कि उद्यम में प्रौद्योगिकी का समुन्नयन एवं नवाचारों का समावेश, मानव संसाधन का सतत् उन्नयन, तथा परस्पर सहयोग तथा सहकारिता। टाटा ग्रुप ने अपने उद्यम में तकनीकी सुधार तथा नवाचार को हमेशा स्थान दिया। उनकी कोशिश रही कि समय के साथ संगठन के कर्मचारीगण नये कौशल सीखें तथा बदलते समय में प्रतिस्पर्धी बने रहें। टाटा समूह में इस बात पर भी हमेशा बल दिया गया कि विभिन्न इकाइयों के मध्य परस्पर सहयोग तथा सहकारिता की भावना का विकास हो। टाटा ग्रुप के प्रबन्धन में कार्मिकों का कल्याण सर्वोपरि रहा है। राष्ट्र के लिए संपदा का सृजन, कार्मिकों का कल्याण तथा उनमें संगठन के प्रति आत्मिक जुड़ाव, टाटा समूह के मंत्र रहे हैं। टाटा समूह के उत्पाद तथा सेवाओं का हेतु मानव कल्याण रहा है। इसलिए टाटा ग्रुप में प्रबन्धन तथा कार्मिकों के मध्य परस्पर आत्मीयता का सम्बन्ध रहा है। यह एक विरासत है जिसका नैरन्तर्य आज भी कायम है। यह बात स्वयं में अनुपम तथा अतुलनीय है। प्रस्तुत है टाटा समूह की नींव रखने वाले उद्योगपति माननीय जमशेदजी टाटा का संक्षिप्त जीवन परिचय जो बेहद रोचक, पठनीय एवं मननीय ही नहीं, अनुकरणीय भी है।

जमशेदजी टाटा

टाटा उद्योग समूह के जनक और पितामह जमशेदजी टाटा (1839–1904) केवल उद्यमी नहीं, उद्यम अवतार थे, जिन्होंने देश में औद्योगीकरण की नींव ऐसे समय में रखी, जब विदेशी शासक यहाँ विकास नहीं चाहते थे। नवसारी (गुजरात) के साधारण पारसी पुजारी परिवार में 3 मार्च 1839 को जन्मे, माता–पिता की पहली व इकलौती संतान में ऐसा कोई संकेत नहीं था कि एक दिन वह अपना भाग्य निर्माता बनेगा। जिस परिवार में पीढ़ियों से लोग पुजारी बनते आये थे, उस परम्परा से हट कर व्यापार में भाग्य आजमाने वाला वह पहला सदस्य था।

प्रारम्भिक शिक्षा नवसारी में लेकर 14 वर्ष की आयु में बम्बई के एलफिंस्टन कॉलेज से 1858 में ''ग्रीन स्कॉलर'' उपाधि ग्रहण की जो आज के स्नातक के समतुल्य है। इस शिक्षा का असर यह हुआ कि जमशेदजी जिंदगी भर के लिए शैक्षणिक व्यवस्था व पुस्तक पढ़ने के प्रेमी बन गए। लेकिन उनका यह शौक कुछ ही समय में पीछे छूट गया जब उन्हें लगा कि जीवन का लक्ष्य कुछ और ही है – बिजनेस।

जे. आर. डी. टाटा के शब्दों में, यह एक ऐसा संक्रमण काल था जब किसी स्थानीय युवक के लिए व्यापार की बात सोचना भी मुश्किल था। सन् 1857 की क्रांति के दो साल ही बीते थे और विदेशी शासकों का भय चरम पर था। बीस वर्ष की उम्र में जमशेदजी ने पिता के छोटे से धन लेन–देन के कारोबार में हाथ बँटाना शुरू किया और 9 वर्ष के अनुभव के बाद 21 हजार रुपये की पूँजी से ट्रेडिंग कम्पनी शुरू की।

इस दौरान इंग्लैंड की यात्रा में जमशेदजी ने टेक्सटाइल व्यापार को समझा और महसूस किया कि देश में ब्रिटिश प्रभुत्व वाले टेक्सटाइल उद्योग में भारत के उद्यमियों को दखल देने की काफी संभावना है। मुंबई के चिंचपोकली इलाके में एक बंद पड़ी पुरानी तेल मिल खरीद कर वहाँ अलेक्जेन्ड्रा मिल के नाम से कॉटन मिल शुरु की। दो साल बाद अच्छे मुनाफे पर मिल बेचकर एक बार फिर इंग्लैंड की यात्रा पर निकल कर लंकशायर कॉटन ट्रेड का बारीकी से अध्ययन किया। मशीनों, कारीगरों व उत्पाद की गुणवत्ता देखकर जमशेदजी को विश्वास था कि वे भारत में उपनिवेशवादी शासकों को टक्कर दे सकते हैं।

परिवर्तन का बीजारोपण

एक दकियानूसी सोच थी कि कोई नई परियोजना स्थापित करनी हो तो मुम्बई ही उपयुक्त है, लेकिन जमशेदजी की सोच थी कि सफलता के लिए आवश्यक है कपास उत्पादकों से नजदीकी, रेल यातायात की सुविधा, पानी व ईंधन की उपलब्धता और महाराष्ट्र में नागपुर इसके लिए उचित स्थान था। वर्ष 1874 में डेढ़ लाख की प्रारंभिक पूंजी से सेंट्रल इंडिया स्पिनिंग, वीविंग एंड मैन्यूफैक्चरिंग कंपनी की नींव रखी गई और तीन साल बाद जनवरी 1877 के पहले दिन जब महारानी विक्टोरिया भारत की महारानी (एम्प्रेस) बनी तो जमशेदजी ने इसे एम्प्रेस मिल घोषित कर दिया।

एम्प्रेस मिल से कामगार कल्याण की एक नई पहल हुई जो उन दिनों कोई नहीं जानता था। इसके साथ ही जमशेदजी के व्यस्त जीवन की महत्वपूर्ण यात्रा शुरू होती है, जिसमें बहुत लम्बी सोच थी। वर्ष 1880 से लेकर 1904 में जीवन के आखिरी क्षण तक

उनके तीन दूरदर्शिता से भरे सपने थे– स्टील प्लांट, जलविद्युत संयंत्र और एक विश्व–स्तरीय वैज्ञानिक संस्थान की स्थापना करना। उनके जीते जी चाहे ये तीनों चीजें फलीभूत नहीं हो पाई, लेकिन जिस संकल्प शक्ति से उन्होंने इन प्रकल्पों का बीजारोपण किया उसका वैभवशाली स्वरूप आज टाटा उद्योग समूह के रूप में प्रत्यक्ष विद्यमान है।

लौह पुरुष

नई टेक्सटाइल मशीनरी की तलाश में मैनचेस्टर यात्रा के दौरान जमशेदजी को थॉमस कार्लाइल का भाषण सुनने का अवसर मिला, जहाँ से उनके मन में विश्वस्तरीय स्टील प्लांट की परिकल्पना जगी। यह एक बहुत बड़ा प्रकल्प था। जिस औद्योगिक क्रांति ने ब्रिटेन तथा अन्य देशों में विकास की लहर पैदा की, भारत उससे अछूता रह गया था। सरकारी नीतियाँ, दुर्गम स्थानों पर खोज का प्रयास और कदम–कदम पर रोड़े, हर मोड़ पर रूकावट ही नजर आती थी।

इस्पात संयंत्र के प्रकल्प को जिन रास्तों से गुजरना पड़ा, वहाँ साधारण व्यक्ति हार मान लेता लेकिन जमशेदजी अड़िग रहे। इतना ही नहीं, बहुत से व्यंग्य भी सहने पड़े। ग्रेट इंडियन पेनिन्सुलर रेलवे के चीफ कमिश्नर सर फ्रेडरिक अपकोट ने भरोसा दिया था कि ''टाटा जितना भी रेल स्टील बनाएगा, वह खप जाएगा''। लेकिन जब 1912 में जमशेदजी की मृत्यु के बाद स्टील प्लांट में पहली पिंडी (प्दहवज) रोल की गई तो सर फ्रेडरिक का कहीं अता पता नहीं था। परन्तु जमशेदजी की आत्मा वहाँ जरूर थी। अपने बेटे दोराब तथा चचेरे भाई आर. डी. टाटा के साथ, जिनके अथक प्रयास ने असंभव को संभव कर दिया था।

उद्योग का निर्माण सिर्फ ईंट पत्थर से नहीं होता। कामगार कल्याण की पहल एम्प्रेस मिल से हो गई थी। जमशेदजी ने काम के घंटे कम किये, कार्यस्थल को हवादार बनवाया, भविष्य निधि व ग्रेच्युटी को लागू किया जो पश्चिमी देशों में भी तब जरूरी नहीं थी। स्टील प्लांट में कामगारों के लिए टाउनशिप की जरुरत और उसकी रुपरेखा जमशेदजी ने 1902 में ही दोराब टाटा को लिखे पत्र में व्यक्त कर दी थी। जब स्टील प्लांट के लिए स्थान का भी चयन नहीं हुआ था – ''खुली सड़कें, छायादार पेड़, बगीचों के लिए काफी जगह, फुटबाल व हॉकी के लिए खेल के मैदान होने चाहिए '' – इस सोच को जहाँ मूर्त रूप मिला, उसे जमशेदपुर कहना सच्ची श्रद्धांजलि है एक राष्ट्रभक्त, भविष्यद्रष्टा और उद्योग रत्न के लिए।

प्रतिभा पोषण

देश को गरीबी से छुटकारा दिलाने के लिए बुद्धि मान मस्तिष्कों के मार्गदर्शन व पोषण की आवश्यकता को देखते हुए सन् 1892 में ही जे. एन. टाटा अक्षय निधि (एंडोमेंट फण्ड) की स्थापना हो गई थी, जिसके माध्यम से से इंग्लैंड में शिक्षा के लिए टाटा छात्रवृत्ति प्रारम्भ हुई और इसी का परिणाम था कि वर्ष 1924 तक भारत की प्रशासनिक सेवाओं में चयनित हर 5 में से 2 अभ्यर्थी टाटा स्कॉलर होते थे। इसी स्रोत से इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस की स्थापना का विचार उपजा, लेकिन जैसा स्टील संयंत्र के साथ हुआ, जमशेदजी की तमन्ना उनके जीवनकाल में पूर्ण

इंडियन इस्टीट्यूट आफ साइंस

न हो सकी। इसके लिए उन्होंने रूपरेखा बनाकर अपनी व्यक्तिगत पूंजी से 30 लाख रूपये देने का संकल्प कर लिया और तत्कालीन वाइसराय लार्ड कर्जन से लेकर स्वामी विवेकानंद तक से सहयोग का आग्रह किया था।

इस सन्दर्भ में स्वामी विवेकानन्द ने 1899 में लिखा था – ''मुझे लगता है भारत में एक सामयिक आवश्यकता के प्रकल्प का प्रादुर्भाव हो रहा है जिसके दूरगामी परिणाम होंगें३..योजना न केवल राष्ट्रहित के परिप्रेक्ष्य में कमजोर कड़ियों पर प्रहार है बल्कि इसमें स्पष्ट दूरदर्शिता और मजबूत पकड़ भी है।'' ऐसे समर्थन के बाद भी सोचना मुश्किल था कि बेंगलुरु में भव्य इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस को आने में 12 वर्ष लग जायेंगे। आखिर सन् 1911 में संस्थान ने कार्य प्रारम्भ किया।

हाइड्रोइलेक्ट्रिक प्रकल्प में अपेक्षकृत कम अवरोध आये, किन्तु इसका लोकार्पण भी जमशेदजी के जीवन काल में न हो सका। फ्रैंक हैरिस ने जमशेदजी की आत्मकथा लिखते हुए कहा– ''यह वो व्यक्ति था जिसका काम उसके जाने के बाद भी जीवन्त है और धारणा तथा परिपक्वता के बीच लकीर खींचना असंभव है। उनको स्मरण करते समय अहसास होता है कि एक मृत व्यक्ति कैसे जीवित प्राणियों में प्रेरणा का संचार कर रहा है। ''

मुंबई का होटल ताज महल वह प्रकल्प है जो जमशेदजी अपने जीते जी देख सके। लेकिन इसका विचार कैसे आया? कहते हैं, नगर के एक प्रतिष्ठित होटल में उन्हें प्रवेश से रोका गया था क्योंकि वे भारतीय थे। उनके पुत्र, मित्र और व्यापार सहयोगी सभी को इसमें संशय नजर आता था, और बहनों ने तो मजाक भी किया था कि ''क्या तुम भोजनालय खोल रहे हो''। इन सब के बीच चार करोड़ इक्कीस लाख की लागत से 1903 में तैयार होटल तमाम सुख–सुविधाओं का अद्भुत नमूना था। यह मुंबई का पहला भवन था जिसमें बिजली थी और देश का पहला होटल, जहाँ अमेरिका के पंखे, जर्मनी की लिफ्ट, तुर्की के स्नानागार (टर्किश बाथ), अंग्रेज खानसामे थे।

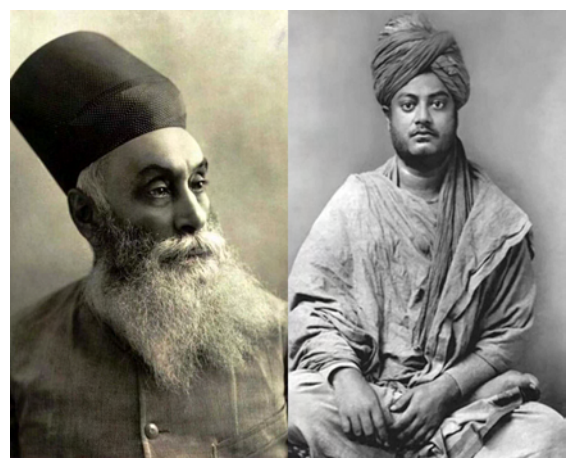

स्वामी विवेकानन्द (दायें)
जो जमशेदजी टाटा के प्रेरणास्रोत रहे

होटल
ताज
महल

अमेरिकी लेखक लेविस एच. लफाम के शब्दों में – धन आग है, पृथ्वी, जल, वायु की ही तरह एक तत्वय मनुष्य इसका उपयोग औजार (टूल) की तरह कर सकता है या ईश्वर का अवतार मानकर इसके इर्द–गिर्द नाचता रहे। जमशेदजी नुसरवानजी टाटा ने इस सम्पदा का उपयोग भारत तथा भारतवासियों के जीवन को संपन्न और समृद्ध बनाने में किया।

स्वदेशी के पितामह – जमशेदजी

स्वतंत्रता संग्राम में विदेशी वस्त्रों की होली जलाना आंदोलन का भाग था। किन्तु नष्ट करने की अपेक्षा निर्माण बड़ा कठिन काम है। और वह तब जब परिस्थितियां विपरीत हों तथा शासक विदेशी हो। वस्त्र उद्योग से स्वदेशी की नींव रखने वाले जमशेदजी द्वारा लगाया गया वट वृक्ष आज साधारण नमक से से लेकर अत्याधुनिक रक्षा उपकरणों के स्वदेशी उत्पादन के क्षेत्रों में संलग्न है। सूचना प्रौद्योगिकी, इस्पात, मोटर वाहन, टेलीकॉम व मीडिया आदि दस विविध श्रेणियों में टाटा समूह के वैश्विक उद्योग संगठन में आज 30 उपक्रम हैं, जिनका कुल वार्षिक कारोबार 10,600 करोड़ अमरीकी डॉलर है। ब्रांड मूल्य के रूप में टाटा समूह देश में प्रथम स्थान पर है।

कोलकाता महानगर में हुगली (गंगा) नदी पर टाटा स्टील के भारतीय इस्पात से भारतीयों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप अभिकल्पित तथा भारतीय उद्योग द्वारा विनिर्मित पुल, मेक–इन–इंडिया की संकल्पना का केवल प्रतीक ही नहीं, प्रेरणा स्रोत है, जो सन् 2018 में 75 वर्ष पूरे कर चुका है। 3 फरवरी 1943 इतिहास का वह स्वर्णिम दिन था, जब द्वितीय विश्वयुद्ध के चलते बिना किसी भव्य आयोजन के हावड़ा ब्रिज का लोकार्पण किया गया था।

स्वास्थ्य सेवा

जमशेदजी ने स्वास्थ्य सेवा को भी व्यापार का अभिन्न अंग माना। इसकी झलक हमें कोविड–19 की वर्तमान वैश्विक महामारी काल में देखने को मिली है। बात 1896 की है जब मुम्बई में प्लेग महामारी का प्रकोप हुआ था। यूक्रेन के युवा डॉक्टर प्रोफेसर हाफकिन ने ग्रान्ट मेडिकल कॉलेज के बरामदे में जैसे–तैसे एक प्रयोगशाला स्थापित कर सन् 1897 में टीका विकसित किया। जमशेदजी ने न केवल इस कार्य को प्रोत्साहित किया बल्कि उन्होंने अपने स्टाफ, मित्रों व परिवार सहित स्वयं टीका लगवाकर समाज से मिथ्या भय और गलतफहमी को दूर करने का काम किया।

टाटा उद्योग समूह का एक विहंगम स्वरूप

सौजन्य : टाटा उद्योग समूह की वेबसाइट पर आधारित हिंदी रूपांतर